Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 02, April-June 2025, pp. 195-199

कुमारी नॉबुल से निवेदिता का भाव–रूपान्तरण

अशोक कुमार*

सार

विश्वशक्ति के रूप में अपने शिखर पर आरूढ़ तत्कालीन इंग्लैण्ड की ओर लोग भय मिश्रित कौतूहल की दृष्टि से देखते थे। सत्ता और वैभव के इस अधिष्ठान में भारत जैसे निर्धन व पराधीन देश से आए गैरिकवसन सन्यासी के लिए प्रारंभ में उदासीनता कोई आश्चर्य की बात नहीं थी किन्तु लन्दन का प्रबुद्ध वर्ग शीघ्र ही इस हिन्दू सन्यासी' की प्रतिभा व मौलिकता का लोहा मान गया। उनके धार्मिक दृष्टिकोण की सार्वजनीनता, भावों की उदात्तता एवं उनके शार्दूल व्यक्तित्व से प्रभावित होने वाली श्रोता मंडली में मार्गरेट एलिजाबेथ नॉबुल अग्रणी थीं जो उस समय लंदन के बौद्धिक क्षेत्र में अपना स्थान व पहिचान बना चुकी थी। मार्गरेट एलिजाबेथ नॉबुल का भगिनी निवेदिता के रूप में स्वामी विवेकानन्द के मिशन के प्रति सर्वतोभावेन समर्पण बीसवीं सदी के धार्मिक इतिहास की विस्मयजनक घटना है। यह न केवल गुरू शिष्य परम्परा का उदात्ततम रूप था अपितु भावरूपान्तरण के सिन्धु संतरण की कष्टसाध्य साधना भी थी। मार्गरेट एलिजाबेथ नॉबुल का निवेदिता में परिणत होना अत्यन्त दुःसाध्य कार्य था।

शब्दकोशः *निवेदिता, शिष्यत्व, धर्मपरायण, विश्वशक्ति, धार्मिक इतिहास।*

प्रस्तावना

इसाई संस्कारों में पली–बढ़ी मार्गरेट एलिजाबेथ नॉबुल के लिए निवेदिता के रूप में ढ़लना विपदाओं की विकट अटवी को पार करने के समान था। यह एक प्रकार से भावनात्मक पुनर्जन्म था। फलतः इसके लिए पुनरपि जननी जठरे शयनम' जैसी पीड़ा झेलना उनकी नियति बन गयी। भगिनी के जीवन के इस महत्वपूर्ण चरण को अपनी पूर्णता में समझने के लिए उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, निर्मायक प्रभावों व युगीन परिस्थिति का विश्लेषण आवश्यक है। उनके व्यक्तित्व को ढ़ालने में ये सभी घटक महत्वपूर्ण थे।

उन्नसवीं सदी की उपज मार्गरेट

28 अक्टूबर, 1867 को आयरलैण्ड में जन्मी मार्गरेट एलिजाबेथ नॉबुल यूरोपीय सभ्यता की देन थी जो उस समय सभी दृष्टियों से अपनी सत्ता के शिखर पर था। शक्ति सम्पन्न यूरोप के बौद्धिक वातावरण में उन्हें मानसिक विकास का अवसर मिला। फलतः उनका मानसिक गठन उस युग का प्रतिनिधित्व करता है। उन्नसवीं

* सहायक आचार्य – राजनीति विज्ञान, राजधानी पी.जी. महाविद्यालय, नारायणपुर।

सदी वस्तुतः राजनीतिक सिद्धान्तों का समरांगण थी। वह इतिहास के प्राधान्य की सदी थी, जहाँ लोग इतिहास की ओर उसी तरह अभिमुख थे, जैसे उनके पूर्वज निर्सगाभिमुख थे। वह गतिशीलता का युग था। वह प्रगति की शताब्दी थी और यह प्रगति स्वतन्त्रता, लोकतन्त्र व राष्ट्रीयता जैसी अमूर्त बातों से सम्बद्ध थी। उस समय एक ओर तो प्रभूत आशावाद था एवं दूसरी ओर उतना ही सशक्त निराशावाद भी व्याप्त था। विचारों और चिन्तन का वैविध्य इस युग की आश्चर्यजनक विशेषता थी। मार्गरेट के ग्रहणशील मानस से जहाँ अपने युग की प्रचलित चिंतनधाराओं का निक्षेप किया, वहीं उनके गतिशील व्यक्तित्व ने बहुत कुछ आत्मसात भी किया। संश्लेषण प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहते हुए उन्होंने प्रत्येक नये विचार का तब तक सतत रूप से अध्ययन किया जब तक वह उनकी बौद्धिक सम्पदा का अंग नहीं बन गया। 19वीं सदी सचेतन रूप से अनेक क्षेत्रों में जीवट भरी टोह का युग था जब मानव की सृजनात्मक प्रतिभा उसकी नैतिक क्षमता से आगे बढ़ चुकी थी। मार्गरेट ने स्वयं को विस्मयकारी व चुनौति भरे विचारों की प्रतिघाती लहरों के बीच पाया।

तत्कालीन आयरलैण्ड

मार्गरेट की जन्मभूमि आयरलैण्ड उस समय पराधीनता के दंश से पीड़ित थी। औद्योगिक क्रान्ति में अग्रणी इंग्लैण्ड उसे पददलित कर रहा था। औद्योगिक क्रान्ति के उद्भूत अभिनव कौशल एवं यन्त्रों पर एकाधिकार इंग्लैण्ड के निरन्तर बढ़ते वैभव का आधार थ। किन्तु आयरलैण्ड की स्थिति सर्वथा भिन्न थी। उद्योगों के अभाव में आयरिश लोगों के सामने एक ही विकल्प था – आव्रजन या भुखमरी। उन्नसवीं सदी में आयरलैण्ड में स्वातंत्र्य अभिलाषा का प्रबल ज्वार उठा था। आयरिश लोगों के दमन पर उतारू अंग्रेजी शासकों के अत्याचारों के विरूद्ध जन–आक्रोश के परिणामस्वरूप वहाँ फिनियन राष्ट्रीय मिलिशिया, होमरूल लीग व लैण्डलीग जैसे जन–आन्दोलन उभरे। प्रत्येक नवीन आन्दोलन के साथ राष्ट्रीय संघर्ष की प्रकृति बदलती गयी किन्तु लक्ष्य यथावत रहा। राष्ट्रीयता की चेतना व राष्ट्रीय स्वाधीनता का लक्ष्य कभी ओझल नहीं हुआ। वह उन्हें निरन्तर प्रेरित करता रहा। इस महद् लक्ष्य की पूर्ति हेतु सतत प्रयत्नशील लोगों में मार्गरेट का पितामह जॉन नॉबुल अग्रणी थे।

निर्मायक प्रभाव

मार्गरेट के व्यक्तित्व को ढ़ालने में युगीन वैचारिक प्रभावों के अतिरिक्त राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत उनके धर्मनिष्ठ परिवार से मिले संस्कारों की महत्ती भूमिका थी। सत्यान्वेषी मार्गरेट को स्वातंत्र्य प्रेम विरासत में मिला था। उनके पितामह जॉन नॉबुल उत्तरी आयरलैण्ड के वेसलेयन ;मेसमलंदद्ध चर्च के प्रोटेस्टेन्ट पादरी थे। इस क्षेत्र में धर्म और राजनीति परस्पर गहरे रूप में जुड़े थे। जॉन नॉबुल मातृ–भूमि की स्वतंत्रता के लिए चलने वाले संघर्ष से सक्रिय रूप से जुड़े थे। मार्गरेट के पिता सेम्युअल रिचमण्ड भी उसी आदर्शवाद से प्रभावित थे। उनका जीवन भी चर्च व राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित था। आयरलैण्ड में स्वतंत्रता का अभाव सैम्युअल के लिए दमघोटू अनुभव था। उनके देश–भक्तिपूर्ण उत्साह से बालिका मार्गरेट भी अछूती नहीं रही।

सत्य की अविरत खोज

स्वातंत्र्य प्रेम और सत्य की अभीप्सा उनकी दूसरी प्रकृति थी एवं इसी के चलते विद्यार्थी जीवन में ही वे ईसाईयत की कई मान्यताओं के प्रति शंकालु हो उठीं। अन्धश्रद्धा से कोसों दूर मार्गरेट तर्क की कसौटी पर खरी न उतरने वाली किसी बात को मानने के लिए तैयार नहीं थी। उनके मन को निरन्तर मथने वाले प्रश्नों का ईसाईयत के पास कोई उत्तर नहीं था। एक पादरी परिवार में जन्म लेने के कारण मार्गरेट का धार्मिकता की ओर पर्याप्त झुकाव था किन्तु साथ ही स्वातंत्र्य प्रेम उनके मन में गहरी जड़े जमाए था। अतः किसी बात को बिना तर्क–वितर्क के स्वीकार कर लेना उन्हें नहीं रूचता था।

स्वतंत्रचेता मार्गरेट की निर्भीकता व तेजस्विता प्रायः उनकी धार्मिक संवेदनशीलता के आड़े आती थी। दस वर्ष की कोमल वय में ही सदैव पाप का स्मरण दिलाने वाली अपने स्कूल की प्रधानाध्यापिका से उनकी भिड़न्त हो गयी जो अपनी बालिका शिष्याओं पर कतिपय काल्पनिक पापों का प्रायश्चित करने हेतु दबाव डालती

थी। यह बात उनके गले नहीं उतरती थी कि मनुष्यों को अभागे पापी माना जाय। जितना अधिक वे इस प्रश्न पर गहराई से विचार करती, धर्म सत्तावाद ;थ्नदकंउमदजंसपेउद्धसे उन्हें उतनी ही अधिक जुगुप्सा होती। इसके खिलाफ विद्रोही तेवर अपनाने की दृष्टि से तो वे उस समय अल्पायु थी किन्तु इस बात का पूर्वाभास मिल चुका था कि किसी दिन वे अप्रबुद्ध धार्मिक शिक्षाओं को मानने से इंकार कर देगी। उनकी दृष्टि से धर्म सत्य के सिवाय और कुछ नहीं था और जहाँ स्वतंत्रता नहीं हो, वहाँ सत्य का अस्तित्व कैसे हो सकता है?

ईसाईयत से मोहभंग

हेलीफेक्स कॉलेज के विद्यार्थीकाल में ही मार्गरेट ने ईसाई धार्मिक विश्वासों पर प्रश्नचिन्ह लगाना प्रारंभ कर दिया। उन्होंने मनोयोगपूर्वक बाईबिल का अध्ययन किया किन्तु उससे संतुष्टि न मिलने पर वे विज्ञान विषयक पुस्तकों की ओर अभिमुख हुईं। अनेक प्रश्न उनके मनोजगत को विक्षुप्त कर रहे थे। मार्गरेट के लिए यह आध्यात्मिक खोज का प्रस्थान बिन्दु मात्र था। सत्य की खोज के लिए उत्सुक जिज्ञासु किशोरी पन्द्रह वर्ष की आयु में चर्च ऑफ इंगलैण्ड के ट्रेक्टेरियन आन्दोलन की ओर आकृष्ट हुई जो सर्वग्राही राज्य के सम्मुख चर्च की स्वतंत्रता की गरिमा को बनाये रखने हेतु प्रतिबद्ध था किन्तु चर्च व्यवस्था में अत्यधिक कठोरता व अनुदारता देखकर उसके स्वातंत्र्य क्षेत्र को अक्षुण्ण बनाये रखने का उनका उत्साह शीघ्र ठंडा पड़ गया। ऐसे आन्दोलन में अनुशासनबद्ध रहना मार्गरेट को गवारा नहीं था। फलतः उससे सम्बद्ध विच्छेद करके उन्होंने पुनः व्यक्तिगत स्वतंत्रता हासिल कर ली। अपनी मूल प्रकृति के विपरीत किसी विचार या व्यवस्था के दमघोटू वातावरण में रह पाना उनके लिए संभव नहीं था। वे एक धर्मपरायण ईसाई थी, अन्धश्रद्धालु नहीं।

दोलायमान मनःस्थिति

मार्गरेट की बौद्धिकता इतनी उच्चस्तरीय थी कि एक वैयक्तिक ईश्वर में विश्वास के संकीर्ण वृत्त में उसे संतुष्टि मिल पाना कठिन था। इन हालात में वे बड़ी उलझन ;फनंदकंतलद्धकी स्थिति में थी। अपितु यह कहना उचित होगा कि वे वस्तुतः तूफानी सिन्धु में सत्य सन्धान हेतु प्रचण्ड लहरों से जुझ रही थी। इस सम्बन्ध में वे लिखती हैं, श्एक समय में मेरे लिए ईसाईयत का अर्थ था, ईश्वर की पिता के रूप में अनुभूति लेकिन इस प्रतीकवाद में मेरा विश्वास बहुत पहले तिरोहित हो चुका था जिसका मुझे गहरा दुःख था। इसके वस्तुगत सत्य–असत्य से परे एक विचार के रूप में इसकी उपयोगिता का अध्ययन करने की मैं इच्छुक थी। इस विषय में तुलनीय सामग्री के अभाव में आगे बढ़ पाना संभव नहीं था।श

शिष्यत्व का वैशिष्ट्य

स्वामी विवेकानन्द के सम्पर्क एंव सान्निधय के फलस्वरूप भगिनी के सोच एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन आया। स्वयं को परिबद्ध करने वाले, तर्कशीलता द्वारा निर्मित पूर्ववर्ती वृत्त को तोड़कर बाहर निकलने का मार्गरेट का यह पहला प्रयास था। वह अपनी आत्मा के विशुद्ध अनुभव के निकट पहुँचने हेतु तत्पर थी। अपनी बौद्धिक प्रतिभा व चरित्र बल पर निर्भर रहते हुए वीरतापूर्वक आगे आयी किन्तु उन्होंने अपने व्यक्तित्व के किसी अंश का रंचमात्र भी परित्याग नहीं किया। स्वामी विवेकानन्द ने मार्गरेट को उसके अहं ;म्हवद्ध की सीमाओं से परे देखा। वे ऐसी सम्पदा से श्रीसम्पन्न थी, जिससे वे स्वयं अनभिज्ञ थी। स्वामी विवेकानन्द ने उनके चरित्र की विस्मयजनक गतिशीलता और अज्ञेय परमतत्व के प्रति उनकी सहज निष्ठा को भली–भाँति परख लिया था। धार्मिक मामलों में विवेकानन्द के अपूर्व वैदुष्य से नॉबुल पूर्णतः अभिभूत हो चुकी थी। मार्गरेट को आवृत्त करने वाली तमिस्रा कहीं पीछे छूट चुकी थी।

मार्गरेट एलिजाबेथ नॉबुल से निवेदिता : प्रथम सोपान

स्वामी विवेकानन्द जानते थे कि यदि ठाकुर (रामकृष्ण परमहंस) की महिला शिष्याओं, जो तत्कालीन रूढ़िवादिता की प्रतीक थी, के प्यार की छाँव मार्गरेट को मिल जाए तो शेष समाज द्वारा उनका स्वीकरण सहज हो जाएगा और भारत में वह अपना कार्य सुगमतापूर्वक कर सकेगी। मार्गरेट को कलकत्ता आगमन के ठीक एक महिने बाद पहली परीक्षा के दौरान से गुजरना पड़ा। 27 फरवरी 1898 को श्री रामकृष्ण का जन्मोत्सव

सार्वजनिक रूप से मनाया जाना था। इस सिलसिले में कुमारी मूलर और मार्गरेट ने दक्षिणेश्वेर में ठाकुर की साधना–स्थली के दर्शन किए, जहाँ उनका स्वागत किया गया। गोपालेर माँ द्वारा मनाये जाने वाले उत्सव में इन विदेशी शिष्याओं को जो अपनत्व और स्नेह मिला, उसने सभी बाधाओं का निवारण कर दिया। ठाकुर की महिला भक्तों से ऐसी सौहार्दपूर्ण भेंट निश्चित रूप से मार्गरेट के लिए हार्दिक उल्लास का विषय था। इस समारोह ने पावनता की प्रतिमा शारदा माँ से उनकी प्रेमपगी भेंट की आधार भूमि तैयार कर दी। यह चिर–प्रतिक्षित अवसर 17 मार्च 1898 को आया। भगिनी ने इस दिनमणि ;क्ंल व ि क्ंलेद्ध की महत्ता को चित्रित करते लिखा है, श्माधुर्य की सजीव प्रतिमा माँ अत्यन्त करूणामयी, प्रेममयी व कन्यासुलभ उल्लासमयी है। अत्यन्त कोमल स्वर में उन्होने मुझे बेटीष कहकर सम्बोधित किया। उन्होंने हमें फल खाने को दिए। जब उन्होंने हमारे हाथों फल ग्रहण किए, हमारे हर्ष का पारावार नहीं था। उनकी इस कृपा ने हमें गरिमा प्रदान की और हमारे भावी कार्य को इस प्रकार आसान बना दिया जितना अन्य किसी तरीके से संभव नहीं था।श माँ शारदा द्वारा प्रेमवर्षण ने भावी काम सुकर दिया।

प्रशिक्षण : दुर्गम पथ

भगिनी ने पूर्ण निष्ठा एवं तत्परता से स्वामी विवेकानन्द के मार्गदर्शन में भारत का अध्ययन प्रारंभ किया। गंगातट पर अवस्थित वृक्षावलि के मध्य उन्हें निर्वेयक्तिक रूप से उन नायक को जानने का अवसर प्राप्त हुआ जिसके कार्य के लिए उनका जीवन समर्पित हो चुका था। इस विषय में वे लिखती है, श्जहाँ अन्य लोग तरीकों व साधनों की बात करते हैं, वह (स्वामी विवेकानन्द) यह जानते थे कि अग्नि कैसे प्रज्जवलित की जाय। जहा अन्य लोग निर्देश देते थे, वे स्वयं अभीप्सित वस्तु के दर्शन करा देते थे। मेरे पूरे शिष्यत्व काल के वर्षो में मेरी भूमिका एक चिन्तन अध्येता ;जेवनहीज त्मंकमतद्धकी रही है। मेरा एकमात्र दावा यह हो सकता है कि मैं अपने गुरुदेव की ऊर्जा परिधि में पर्याप्त रूप से प्रवेश करने में कृतकार्य हुई जिसने मुझे उसके बारे में प्रत्यक्ष बोध से साक्ष्य प्रदान करने में सक्षम बनाया है। भगिनी के अनुसार, प्रशिक्षण की आवश्यकता इसलिए थी कि उन लोगों को छोडकर जिन्होंने भारत सम्बन्धी विशेष अध्ययन किया है, समान्यतया पश्चिमती लोगों की भारत विषयक अज्ञानता को निरक्षरता ;पससपजमतंबलद्ध कहा जा सकता है।

निष्कर्ष

मार्गरेट एलिजाबेथ नॉबुल के भगिनी निवेदिता में रूपान्तरण को समझने के लिए स्वतंत्रता विषयक स्वामी विवेकानन्द की अवधारणा का संक्षेप में उल्लेख आवश्यक है। जैसे स्वामी विवेकानन्द के अनुसार एक ईसाई को हिन्दू या बौद्ध बनने की आवश्कता नहीं है या किसी हिन्दू या बौद्ध को ईसाई बनने की आवश्यकता नही है किन्तु प्रत्येक को दूसरे की चेतना को आत्मसात करना चाहिए तथापि उसे अपनी निजता की रक्षा करते हुए वृद्धि के अपने नियम के अनुसार वृद्धिमान होना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द ने विश्व जनीनता के परमहंस के जिस अनुभूत सत्य का प्रभावी प्रतिपादन विश्व के सम्मुख किया था उसमें संकीर्णता, दुराग्रह या हठधर्मिता के लिए कोई स्थान नहीं था। मानव कल्याण की भावना और उदारता की चेतना से स्पंदित इस धर्म के शाश्वत सत्यों की अनुभूति होने पर निवेदिता के आन्तरिक संघर्ष का सदैव के लिए अन्त हो गया।

इस भाव रूपान्तरण के बाद वे गुरुदेव के मिशन की पूर्ति हेतु सभी प्रकार के सक्षम हो चुकी थीं। स्वामी विवेकानन्द को अपने मिशन के लिए जिस प्रकार की महिला की आवश्यकता थी, मार्गरेट एलिजाबेथ नॉबुल ने निवेदिता बनकर उसे सम्पन्न कर दिया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डे, रत्नाकर – जवाहर लाल नेहरू संशोधित संस्करण 2009 यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन प्रकाशदीप बिल्डिंग–22 अंसारी रोड़ दरियागंज नई दिल्ली 110002।
2. बसु, दुर्गादास – भारत का संविधान एक परिचय संस्करण 2008 ।

3. मिश्र, कन्हैया लाल – उत्तर प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम की एक झांकी, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश लखनऊ 1972।

4. मित्तल, ए. के. – आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (1707–1950) साहित्य भवनपब्लिकेशन आगरा 2003।

5. मेनरल व मिट्टल – उत्तराखण्ड़ के प्रमुख सेनानी , अल्मोड़ा 1977।

6. वैष्वर्ण्य, यमुना दत्त – संस्कृति संग्राम उत्तरांचल , नैनीताल 1977।

7. सेन, श्री ई. – स्वामी विवेकानन्द की अल्मोड़ा की तीन यात्राएं (स्मारिका) 1973।

8. सांकृत्यायन, राहुल – कुमायूँ , वाराणसी 1958।

♦❒♦